

---

# Shri Shiva Stotram

---

## श्रीशिवस्तोत्रम् १०

---

### Document Information

Text title : Shri Shiva Stotram 02 03

File name : shivastotram10.itx

Category : shiva, stotra

Location : doc\_shiva

Proofread by : Aruna Narayanan

Description/comments : From stotrArNavaH 02-03

Latest update : July 25, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 25, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Shiva Stotram

---

### श्रीशिवस्तोत्रम् १०

---



जय जय शम्भो गिरिजाबन्धो शिव शिव शङ्कर भूतपते ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १ ॥

शिव सुरनायक मङ्गलविग्रह कुरु कुरु मङ्गलमाशु विभो ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ २ ॥

शरणं यामश्ररणद्वन्द्वं तव (पद) यत् कमलापतिमृग्यं (वेलम्) ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ ३ ॥

तव पदकमलादमलादन्यच्चिन्तितमपि न हि चेतसि (शं)भो ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ ४ ॥

नामैवोत्तम तव पदममलं मङ्गलदायकमङ्गलदम् ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ ५ ॥

शिव वयमशिवं न भजामस्त्वयि सति सशिवे शिवमूर्ते ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ ६ ॥

भगवन् भवता भवतापहता न हतं दुरितं किं नु कृतम् ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ ७ ॥

सकृदपि तव हर नामस्मरणं कृतमघकुलहरमतिशुभदम् ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ ८ ॥

स्मृतमपि तव हर चरणद्वन्द्वं हरति विषादं किमु दुष्टम् ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ ९ ॥

हर यद्यस्मत्कृतमपराधं विविधं कृपया हरसि तथा ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १० ॥

सुतमपराधिनमपि कृतशिक्ष जनकः पालयतीश यथा ।  
गिरिश महापञ्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ ११ ॥

भवता सृष्टं जगदिव सृष्टानस्मानयि भव पालय नित्यम् ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १२ ॥

जगतामेको जनकस्त्वमतो वयमपि जगतो न हि भिन्नाः ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १३ ॥

न हि जानीमो भवदन्यं शङ्कर धीरं पातारम् ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १४ ॥

देव गजासुरपरिहृतविभवानस्मान् (भयद) सभवानव सदय ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १५ ॥

शरणं भव भव शरणं भव भव भव शरणं त्वं करुणाब्धे ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १६ ॥

न सुता वयमपि तव किमु शम्भो जनको न भवानस्माकम् ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १७ ॥

भवता सृष्टाः सकला लोका वयमपि तद्वद्धर सृष्टाः ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १८ ॥

भव भवदन्यं न वयं यामः सकृदपि शरणं मरणे वा ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ १९ ॥

निरवधिकरुणापारावारस्त्वमतो हर हर भवदुःखम् ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ २० ॥

भव भवदीयानस्माननिशं कुरु गतदुःखानतिदुःखान् ।  
गिरिश महापज्जलधेरस्मानुद्धर धीर कृपाजलधे ॥ २१ ॥

॥ इति श्रीशिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Aruna Narayanan

---



*Shri Shiva Stotram*

pdf was typeset on July 25, 2021



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

